संगति

भाग – १४

सृष्टि में मायिकी विद्या हासिल करने के लिए, स्कूल कालिज तथा यूनीवर्सिटी (university) में पढ़ाई करनी पड़ती है — जहाँ अध्यापक, प्रोफैसर तथा वैज्ञानिक **मायिकी विद्या पढ़ाते हैं।**

जो इन्सान स्कूलों में दाखिल नहीं होते अथवा विद्या हासिल नहीं करते, वे अनपढ़, मूर्ख व बुद्धु ही रहते हैं। **उनकी बुद्धि का विकास नहीं होता** तथा वे सांसारिक विद्या तथा विज्ञान के ज्ञान से कोरे रहते हैं, जिस कारण **इनके सुखों से भी वंचित रहते हैं।**

ठीक इसी प्रकार **आत्मिक मंडल का 'अनुभवी ज्ञान'** अर्जित करने के लिए दैवीय **'सत् संगति'** अथवा साध संगति ही आत्मिक स्कूल, कालिज, यूनिवर्सिटी है — जिसमें विचरण करते हुए **आत्म विद्या सीखी जा सकती है** तथा **विवेक बुद्धि अथवा अनुभवी ज्ञान प्राप्त होता है।**

इस आत्मिक संगति **अथवा 'साध संगति' के अनुभवी ज्ञान के बिना** जीव मायिकी भ्रम-भुलाव के अन्धकार में पलच-पलच कर **अज्ञानता भरा जीवन व्यतीत करते हैं तथा आत्मिक मंडल के अनगिनत सुखदायी तथा कल्याणकारी गुणों से वंचित रहते हैं।**

संता सेती रंगु न लाए ॥
साकत संगि विकरम कमाए ॥
दुलभ देह खोई अगिआनी
जड़ अपुणी आपि उपाड़ी जीउ ॥ (पृ १०५)

बिनु संगती सभि ऐसे रहहि जैसे पसु ढोर ॥ (पृ ४२७)

जिन सतिगुर संगति संगु न पाइआ
से भागहीण पापी जमि खाइआ ।। (पृ ४९४)

बिनवंत नानक बिनु साधसंगम सभ मिथिआ संसारी ।। (पृ ५४७)

साधसंगति बिनु भ्रमि मुई करती करम अनेक ।। (पृ ९२८)

इसीलिए गुरबाणी में **'साध संगति' को 'विद्यालय' भी कहा गया है,** जहाँ **ईश्वरीय गुण सिखाये जाते हैं** —

सतसंगति सतिगुर चटसाल है जितु हरि गुण सिखा ।। (पृ. १३१६)

कितु बिधि किउ पाईऐ प्रभु अपुना
मो कउ करहु उपदेसु हरि दान ।।
सतसंगति महि हरि हरि वसिआ
मिलि संगति हरि गुन जान ।। (पृ १३३५)

इसी प्रकार साध संगति में विचरण करते हुए अन्य अनेक दैवीय गुण सहज-स्वभाव प्राप्त होते हैं —

साध संगति ही 'परमार्थ' का उत्तम पंथ है —

इकु उतम पंथु सुनिओ गुर संगति
तिह मिलंत जम त्रास मिटाई ।। (पृ १४०६)

साध संगति करते हुए 'कुण्डलनी' भी खुलती है —

कुंडलनी सुरझी सतसंगति परमानंद गुरू मुखि मचा ।। (पृ. १४०२)

'अहम्' भी साध संगति द्वारा मिटता है —

साध कै संगि मिटै अभिमानु ।।.....
साध कै संगि नाही हउ तापु ।।
साध कै संगि तजै सभु आपु ।। (पृ २७१)

संत जना कै संगि हउमै रोगु जाइ ।। (पृ. ९६१)

संतसंगि हउमै दुख नसा ।। (पृ११४६)

मिलि पाणी जिउ हरे बूट ।।
साधसंगति जिउ हउमै छूट ।। (पृ ११८१)

साधसंगि मिलि हरि गुन गाए बिनसी सभ अभिमानी ।।(पृ. १२२८)

साध संगति द्वारा सदीवी आत्म सुख अथवा महा आनन्द प्राप्त होता है —

भाई रे सुखु साधसंगि पाइआ ।। (पृ ४२)

साध कै संगि सदा सुखु पावै ।। (पृ २७१)

जिसु सुख कउ नित बाछहि मीत ।।
सो सुखु साधू संगि परीति ।। (पृ २८८)

साधसंगि सदा सुखु पाईऐ हरि बिसरि न कबहू जाई ।। (पृ. ६१६)

जब ते दरसन भेटे साधू भले दिनस ओइ आए ।।
महा अंनदु सदा करि कीरतनु पुरख बिधाता पाए ।। (पृ ६७१)

सरब सूख नानक पाए संगि संतन साथि ।। (पृ ८१४)

साधू संगि सरब सुख पाए ।। (पृ ११४८)

जे लोड़हि सदा सुखु भाई ।।
साधू संगति गुरहि बताई ।। (पृ ११८२)

समस्त दुखों से निवृत्ति भी साध संगति द्वारा होती है —

नाम रासि साध संगि खाटी ।।
कहु नानक प्रभि अपदा काटी ।। (पृ १९४)

साधू संगु करहु सभु कोइ ।।
सदा कलिआण फिरि दूखु न होइ ।। (पृ १९६)

संत प्रसादि हरि जापीऐ ।।
सो जनु दूखि न विआपीऐ ।। (पृ २११)

भजु साधसंगति सदा नानक मिटहि दोख कमाते ।। (पृ. ४६१)

साधसंगमि हरि अराधे सगल कलमल दुख जले ।। (पृ ५४८)

संतां संगि उधारु सगला दुखु लथा ।। (पृ ७०९)

गुर संत सभा दुखु मिटै रोगु ।। (पृ ११७०)

तीर्थ स्नान, सत्य स्नान अथवा आत्मिक स्नान भी साध संगति में विचरण करते हुए सहज स्वभाव हो जाता है —

संत जना मिलु संगती गुरमुखि तीरथु होइ ।।
अठसठि तीरथ मजना गुर दरसु परापति होइ ।। (पृ ५९७)

संगति मीत मिलाप पूरा नहावणो ।। (पृ ८६७)

संगति संत मिलाए ।।
हरि सरि निरमलि नाए ।।
निरमलि जलि नाए मैलु गवाए भए पवितु सरीरा ।। (पृ. ७७४)

हरि जन अंम्रित कुंट सर नीके वडभागी तितु नावाईऐ ।। (पृ ८८१)

सतसंगति की रेणु मुखि लागी **कीए सगल तीरथ मजनीठा ।।**(पृ १२१२)

सतसंगति साध धूरि मुखि परी ।।
इसनानु कीओ अठसठि सुरसरी ।। (पृ ११३४)

'बैकुंठ धाम' भी साध संगति ही है —

कहु कबीर इह कहीऐ काहि ।।
साधसंगति बैकुंठै आहि ।। (पृ३२५)

मुकति बैकुंठ साध की संगति जन पाइओ हरि का धाम ।।
(पृ ६८२)

बैकुंठ नगरु जहा संत वासा ।। (पृ ७४२)

एक पलक सुख साध समागम कोटि बैकुंठह पाए ।। (पृ.१२०८)

साध संगति द्वारा ही परमार्थ अथवा ईश्वरीय गुणों की दृढ़ता आती है —

साध कै संगि द्रिड़ै सभि धरम ।। (पृ २७१)

हरि हरि संत मिलहु मेरे भाई **हरि नामु** द्रिड़ावहु इक किनका ।। (पृ ६५०)

सतसंगति मिलै त दिड़ता आवै हरि राम नामि निसतारे ।। (पृ. ९८१)

साध संगति द्वारा 'वैर-विरोध' भी मिटते हैं —

साधसंगि किस सिउ नही बैरु ।। (पृ २७१)

साधसंगि दुसमन सभि मीत ।। (पृ २७१)

मिटि गए बैर भए सभ रेन ।।
अंम्रित नामु साधसंगि लैन ।। (पृ २९५)

साध जना के पूजे पैर ।।
मिटे उपद्रह मन ते बैर ।। (पृ ३९५)

बिसरि गई सभ ताति पराई ।।
जब ते साधसंगति मोहि पाई ।।१।। रहाउ।।
ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ।।
(पृ १२९९)

साध संगति में विचरने वाले 'संगी' ही सच्चे मित्र तथा साजन हैं —

हरि संता हरि संत सजन मेरे मीत सहाई राम ।। (पृ ४५३)

जिन्हा दिसंदड़िआ दुरमति कै मित्र असाडड़े सेई ।। (पृ ५२०)

बिनवंति नानकु वडभागि पाईअहि **साध साजन मीता** ।। (पृ. ५४३)

संगि मिलाइ लीआ मैरै करतै **संत साध भए साथी** ।। (पृ ६२८)

ओइ साजन ओइ मीत पिआरे ।।
जो हम कउ हरि नामु चितारे ।। (पृ ७३९)
होइ एकत्र मिलहु संत साजन गुण गोबिंद नित गाहि ।। (पृ.१२२२)

साध संगति ही निश्चल आसन है —

करि मित्राई साध सिउ **निहचलु पावहि ठाउ ।।** (पृ ४३१)

निहचल संगति साध जन बचन निहचल गुर साधा । (पृ. ११०१)

संत मंडल का निहचलु आसनु ।। (पृ. ११४६)

साध संगति द्वारा तृष्णा अग्नि बुझती है तथा 'संतोष' आता है ।

नानक की प्रभ बेनती मेरी जिंदुडीए **मिलि साधू संगि अघाणे राम ।।**
(पृ ५४१)

भइओ क्रिपालु सतसंगि मिलाइआ ।।
बूझी तपति घरहि पिरु पाइआ ।। (पृ ७३८)

संगति करत संतोखु मनि पाइआ ।। (पृ ८८९)

कहु नानक जउ साधसंगु पाइआ ।।
बूझी त्रिसना महा सीतलाइआ ।। (पृ ९१३)

साध संगति द्वारा आत्मिक शीतलता व शान्ति प्राप्त होती है —

ठांढि परी संतह संगि बसिआ ।। (पृ २५६)

एकु बोलु भी खवतो नाही साधसंगति सीतलई ।। (पृ. ४०२)

अगनि सागर भए सीतल **साध अंचल गहि रहे ।।** (पृ ४५८)

संत संगि जा का मनु सीतलु ओहु जाणै सगली ठांढी ।।(पृ. ६१०)

'हरि धन' अथवा **'नाम खजाना' भी साध संगति द्वारा प्राप्त होता है ।**

सुखि बैसहु संत सजन परवारु ।।
हरि धनु खटिओ जा का नाहि सुमारु ।। (पृ १८५)

साध कै संगि पाए नाम निधान ।। (पृ २७१)

साधू कै संगि सो धनु पावै ।।
जिसु धन ते सभु को वरसावै ।। (पृ २७१)

साध संगि पावहि सचु धना ।। (पृ २८९)

सपतमि संचहु नाम धनु टूटि न जाहि भंडार ।।
संतसंगति महि पाईऐ अंतु न पारावार ।। (पृ २९८)

हरि धनु जाप हरि धनु ताप हरि धनु भोजनु भाइआ ।।
निमख न बिसरउ मन ते हरि हरि **साधसंगति महि पाइआ।।**(पृ ४९५)

सतसंगति नामु निधानु है जिथहु हरि पाइआ ।। (पृ १२४४)

साध संगति में ही 'पारस कला' घटती है तथा जीव कंचन समान हो जाता है —

जिउ लोहा पारसि भेटीऐ **मिलि संगति सुवरनु होइ जाइ ।।** (पृ. ३०३)

सतसंगति मिलि बिबेक बुधि होई ।।
पारसु परसि लोहा कंचनु सोई ।। (पृ ४८१)

पारसु भेटि कंचनु धातु होई सतसंगति की वडिआई ।।(पृ. ५०५)

राम पारस चंदन हम कासट लोसट ।।
हरि संगि हरी सतसंगु भए हरि कंचनु चंदनु कीने ।।(पृ.६६८)

कबीर चंदन का बिरवा भला बेढ़िओ ढाक पलास ।।
ओइ भी चंदनु होइ रहे बसे जु चंदन पासि ।। (पृ १३६५)

'पतित' जीव भी साध संगति द्वारा पावन हो कर प्रवान चड़ते हैं —

पिछले गुनह सतिगुरु बखसि लए **सतसंगति नालि रलावै ।।** (पृ ८५५)

जिउ चंदन निकटि वसै हिरडु बपुड़ा
तिउ सतसंगति मिलि पतित परवाणु ।। (पृ. ८६१)

जिउ छुहि पारस मनूर भए कंचन तिउ पतित जन
मिलि संगती सुध होवत गुरमती सुध हाधो ।। (पृ. १२९७)

साध संगति द्वारा ही 'सुन्दर' तथा 'शोभायमान' होते हैं —

मिलि साधू संगि उधारु होइ मुख ऊजल दरबारि ।। (पृ. २१८)

सुंदरु सुघडु सूरु सो बेता जो साधू संगु पावै ।। (पृ ५३१)

नानक से जन सोहणे जि गुरमुखि मेलि मिलाइ ।। (पृ. ८४९)

सो पतिवंता जिनि साधसंगु पाइआ ।। (पृ १०७९)

सेई सुंदर सोहणे ।।
साधसंगि जिन बैहणे ।। (पृ १३२)

साध संगति द्वारा आत्मिक 'सहज' अवस्था प्राप्त होती है —

जिसु साधू संगति तिसु सभ सुकरणी जीउ ।।
जन नानक सहजि समाई जीउ ।। (पृ २१७)

नानक हरि जसु संगति पाईऐ
हरि सहजे सहजि मिलाइआ ।। (पृ १०४२)

गुर संत सभा दुखु मिटै रोगु ।।
जन नानक हरि वरु सहज जोगु ।। (पृ ११७०)

साध संगति द्वारा ही प्रभु की खोज हो सकती है —

मिलि सतसंगती लधा हरि सजणु
हउ सतिगुर विटहु घुमाईआ जीउ ।। (पृ ९६)

खोजी खोजि लधा हरि संतन पाहा राम ।। (पृ ८४५)

हरि खोजहु वडभागीहो मिलि साधू संगे राम ।। (पृ ८४८)

जिनि एहु चाखिआ राम रसाइणु
तिन की संगति खोजु भइआ ।। (पृ ९०७)

दुरलभं एक भगवान नामह नानक
लबध्यिं साधसंगि क्रिपा प्रभं ।। (पृ १३५७)

साध संगति ही आत्मिक किश्ती अथवा नाव रूप है जिस द्वारा भव सागर पार हो सकता है —

साधसंगि नानकु भजै बिखु तरिआ संसारु ।। (पृ २०३)

तारीले भवजलु तारू बिखड़ा बोहिथ साधू संगा ।। (पृ २०८)

साध जना कै संगि भवजलु तारिअनु ।। (पृ ५१७)

नाव रूप भइओ साधसंगु भव निधि पारि परा ।। (पृ ७०१)

संतसंगि हरि चरन बोहिथ उधरते लै मोर ।। (पृ ११२१)

नाव रूप साधसंग नानक पारगरामी ।। (पृ १२३०)

साध संगति में ही आत्मिक 'तत्' का मंथन करते हैं —

मेरे प्रभ सालाहनि से भले पिआरे सबदि रते रंगु होइ ।।
तिस की संगति जे मिलै पिआरे रसु लै ततु विलोइ ।।(पृ. ६३६)

तितु जाइ बहहु सतसंगती
तिथै हरि का हरि नामु बिलोईऐ ।। (पृ ५८७)

'संत जन' की संगति में ही 'अकथ कथा' की सूझ आती है —

संत जना मिलि पाइआ सुणि अकथ कथा मनि भाणी ।।(पृ. ९९७)

संत मंडल महि निरमल कथा ।। (पृ ११४६)

हरि हरि कथा सुनी मिलि संगति
हरि हरि जपिओ अकथ कथ कथा ।।(पृ. १२९६)

हरि कथा सुणावहु मेरे गुरसिखहु मेरे हरि प्रभ अकथ कहाणी ।।
(पृ १३१७)

साध संगति द्वारा ही माया की नींद से मन जागता है —

साधसंगति परसादि संतन कै सोइओ मनु जागिओ ।। (पृ. २१५)

साध संगि मन सोवत जागे ।। (पृ ३८६)

संतह संगु संत संभाखनु हरि कीरतनि मनु जागै ।। (पृ. ६७४)

मोहि निरगुण प्रीतम सुख सागर संतसंगि मनु जागा ।। (पृ. ७८१)

साध संगति के आसरे नरक से बच जाते हैं —

गुरि पूरै उपदेसिआ **नरकु नाहि साधसंगि ।।** (पृ २५७)

साध कै संगि नरक परहरे ।। (पृ २७२)

नरक रोग नही होवत जन संगि नानक जिसु लड़ि लावै ।। (पृ ५३१)

संता संगति नरकि न पाई ।। (पृ १०२०)

साध संगति द्वारा ही 'मायिकी बंधनों' से मुक्ति होती है —

टूटे बंधन जासु के होआ साधू संगु ।। (पृ २५२)

याहू जतन करि होत छुटारा ।।
उआहू जतन साध संगारा ।। (पृ २५९)

सभि दुख भुख रोग गए हरि सेवक के
सभि जन के बंधन तोड़ीए ।। (पृ ५५०)

अब मनु छूटि गइआ साधू संगि मिले ।। (पृ ७०५)

तूटे बंधन साधसंगु पाइआ ।। (पृ ११४१)

साध संगति की 'सेवा' ही कल्याणकारी है —

जन की टहल संभाखनु जन सिउ
उठनु बैठनु जन कै संगा ।। (पृ ८२८)

साध की सेवा सदा सुहेली ।। (पृ ११८२)

जिस कउ चाहहि सुरि नर देव ।।
संत सभा की लगहु सेव ।। (पृ ११८२)

भगतन की टहल कमावत गावत
दुख काटे ता के जनम मरन ।। (पृ १२०६)

साध संगति द्वारा ही मुक्ति भी प्राप्त होती है —

संत सभा गुरु पाईऐ **मुकति पदारथु धेणु ।।** (पृ १८)

मुकति पाईऐ साधसंगति बिनसि जाइ अंधारु ।। (पृ ६७५)

साधसंगि भए जन मुकते गति पाई नानक नदरि निहलीआ ।। (पृ १००४)

साधसंगति नानकु भइओ मुकता दरसनु पेखत भोरी ।। (पृ. १२१६)

मुकति पदारथु साधू संगति अंम्रितु हरि का नाउ ।। (पृ १२२०)

मुकति भए साधसंगति करि तिन के अवगन सभि परहरिआ ।। (पृ १२३५)

कबीर साधू संगु परापती लिखिआ होइ लिलाट ।।
मुकति पदारथु पाईऐ ठाक न अवघट घाट ।। (पृ १३७७)

इस लेख की श्रृंखला में —

'सत् संगति' अथवा **'साध संगति' के अनगिनत लाभ तथा 'कुसंगति' द्वारा जो आधि-व्याधि या दुख क्लेश घटते हैं,** उन्हें विस्तार पूर्वक दर्शाया गया है।

इन समस्त विचारों का **निचोड़ या 'तत्'** यूँ दर्शाया जा सकता है —

'मेल' अथवा **'संगति'** —

शारीरिक
मानसिक
भावुक
आत्मिक

स्तर पर होती है ।

ऐसा **'मेल'** अनेक मानसिक मनोभावों तथा भावनाओं के संगों तथा तरंगों का होता है।

इन **तरंगों की तीक्ष्णता** (intensity) ख्यालों तथा मनोभावों के **अभ्यास** (Practice) पर निर्भर है ।

उदाहरण के रूप में — 'स्त्री-मर्द' का **शारीरिक 'जोड़'** रस्मी विवाह द्वारा होता है — परन्तु दोनों के **ख्याल-निश्चय-रुचियाँ, अलग-अलग होने के**

कारण उनका मानसिक तथा भावनात्मक 'मेल' नहीं होता — जिस कारण उनका सारा जीवन बेसुरे खींचतान में ही गुजरता है। विवाह की रस्मी जंजीरों से **जकड़े हुऐ बेसुरे** शरीरों का गृहस्थी जीवन माया के झंझटों में पलच-पलच कर व्यर्थ जाता है।

धन पिरु एहि न आखीअनि बहनि इकठे होइ ।।
एक जोति दुइ मुरती धन पिरु कहीऐ सोइ ।। (पृ ७८८)

यदि किसी विरले दम्पति (couple) की **मानसिक सतह पर 'एक सुरता'** हो भी जाये तो भी उनका **भावनात्मक तथा आत्मिक सतह पर मेल होना कठिन है** —

मिलिऐ मिलिआ न मिलै मिलै मिलिआ जे होइ ।।
अंतर आतमै जो मिलै मिलिआ कहीऐ सोइ ।। (पृ ७९१)

ऐसा **'बेसुरा'** खींचतान वाला गृहस्थी जीवन सारी उम्र **'कुसंगति' में ही व्यतीत होता है।**

यही प्रमाण — हमारे अन्य सम्बन्धियों-मित्रों तथा संगी-साथियों के 'मेल' अथवा 'संगति' पर भी घटता है।

यदि शारीरिक-मानसिक-भावनात्मक सतह पर किसी विरले जीवों से **'एक सुरता'** (in tune) हो भी जाये, तब भी उन की **सूक्ष्म तरंगों की तीव्रता तथा तीक्ष्णता** में अन्तर होता है — जो उनके जीवन में **'खटपटी' तथा 'तनाव' का कारण बनता है।**

इन्सान के व्यक्तित्व के कई **आन्तरिक पहलू या हिस्से हैं** —

शरीर
मन
बुद्धि
इच्छाएं
तरंगें
निश्चय

भावना

स्वैमना

अन्तःकरण

अहंकार आदि ।

ये आन्तरिक मानसिक 'पहलू' परस्पर **'एक-सुर' नहीं होते,** जिस कारण हमारे **आन्तरिक रव्यालों-भावनाओं का 'टकराव' होता रहता है तथा दुविधा की 'हलचल' अपने भीतर मची रहती है ।**

दुबिधा लागे पचि मुए अंतरि त्रिसना अगि ।। (पृ. १९)

दुबिधा मनमुख रोगि विआपे **त्रिसना जलहि अधिकाई** ।। (पृ. ११३०)

दुबिधा बउरी मनु बउराइआ ।। (पृ. १३४२)

मनमुख मन अठ खंड हेइ दुसटा संगति भरमि भुलावै । (वा.भा.गु५/१७)

समस्त संसार के अंदर जो **वाद-विवाद, ईर्ष्या-द्वैत, तनाव, लड़ाईयां, झगड़े हो रहे हैं, वह सब हमारे 'व्यक्तित्व' की आन्तरिक दुविधा अथवा द्वैत भाव की हलचल का ही प्रतिबिम्ब तथा प्रकटाव है ।**

जब हमारे आन्तरिक पहलुओं अथवा मनोभावों का ही परस्पर **मेल या 'इक सुरता' नहीं होती, तब दूसरे प्राणियों से 'मेल' या 'संगति' अथवा 'एक-सुरता' कैसे हो सकती है** ?

दरार वाले अथवा टूटे-फूटे बर्तन में कोई वस्तु टिक नहीं सकती । इसी प्रकार **'द्वैत भाव' से टूटे फूटे चकनाचूर अथवा बाहर मुख विखण्डित हुए दिलों का परस्पर 'मेल' या 'संगति' नहीं हो सकती तथा न ही ऐसे दुविधापूर्ण दिलों में कोई आत्मिक गुण अथवा नाम टिक सकता है तथा अकाल पुरुष से मेल भी नहीं हो सकता।**

कबीर जा की दिल साबित नही ता कउ कहां खुदाइ ।।(पृ. १३७४)

ऐसे दुविधापूर्ण दिलों का परस्पर **मेल नहीं हो सकता** तथा उनकी किसी से **नहीं बन पाती ।**

साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ।। (पृ १३५)

ऐसे टूटे हुए दिलों वाले 'जीव' भूत-प्रेतों की भांति स्वयं रची हुई अहम् की **'पृथक कोठड़ी' में नरक भोगते तथा यम के वश पड़ते हैं ।**

दुयै भाइ विगुचीऐ गलि पईसु जम की फास ।। (पृ १३४)

टूटे हुए दिलों को पुनः 'एक सुर' करने के लिए अथवा जोड़ने के लिए गुरबाणी में **'सत संगति' अथवा 'साधसंगति' ही बतायी गयी है** —

साध संगि किस सिउ नहीं बैरु ।। (पृ २७१)

मिटि गए बैर भए सभ रेन ।।
अंम्रित नामु साधसंगि लैन ।। (पृ २९५)

खिंचोताणि विगुचीऐ एकसु सिउ लिव लाइ ।।
हउमै मेरा छडि तू ता सचि रहै समाइ ।। (पृ ७५६)

बिसरि गई सभ ताति पराई ।।
जब ते साधसंगति मोहि पाई ।। रहाउ ।।
ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ।।
(पृ १२९९)

शारीरिक मानसिक, भावनात्मक तथा **आत्मिक सूक्ष्म तंरगों की सतह पर जीवों का 'एक सुर' होना कठिन है** — परन्तु बरख्शे हुए गुरमुख प्यारों — संतों-भक्तों- हरिजनों के **'मेल' अथवा साध संगति द्वारा** सहज ही यह गुरमुख अवस्था प्राप्त हो सकती है ।

दूसरे शब्दों में **आत्मिक सतह पर जीवों के 'मेल' या 'संगति' को ही** —

सत संगति
साध संगति
संत संगति
सच्ची संगति
उत्तम संगति

दैवीय संगति

गुर संगति

गुर सभा

साध सभा

संत मंडली

कहा गया है ।

'रूहों' का अकाल पुरुष से ईश्वरीय **ज्योति द्वारा आत्मिक नाता** होने के कारण, '**आत्म मेल**' धुर से ही बना हुआ है, क्योंकि सृष्टि का प्रत्येक '**कण**' अकाल पुरुष की गुप्त '**प्रेम डोरी**' से बँधा हुआ है ।

इस ईश्वरीय प्रेम डोरी में —

पिरोये रहना

सुर में हिलना

हुकुम में चलना

प्रेम स्वैपना में उड़ान भरना

प्रेम रंग अनुभव करना

प्रिम रस में मस्त होना

चाव में खिलना

ही सच्ची-पवित्र जीवन्त

आत्मिक **'सतसंगत'** अथवा **'साध संगति'**

कहला सकती है ।

जिस प्रकार दुर्घटना (accident) के कारण पिछली याद्दाश्त चली जाती है तथा पहला जीवन भूल जाता है । इसी प्रकार माया के भ्रम भुलाव में गुमराह हो कर हमारी चेतनता (consciousness) में से **परमेश्वर की 'याद' निकल जाती है तथा हम भूल में विचरण करते हैं ।** इस प्रकार —

परमेश्वर को भूलना

झूठी माया में विचरण करना

मायिकी पदार्थो में खंचित होना
ईश्वर से टूटे हुए जीवों से मेल करना ही
'कुसंगति'
कहलाती है ।

प्रकाश के बिना अन्धकार की प्रवृति होती है ।

इसी प्रकार **'साध संगति'** के आत्मिक अनुभव प्रकाश के बिना — **मायिकी कुसंगति के भ्रममय 'अन्धकार' का छा जाना अनिवार्य है ।**

साधसंगति असथान जगमग नूर है । (वा.भा.गु ३/१०)
साधसंगति विण भरम भलाइआ । (वा. भा. गु. ३९/१६)

तभी **'सतसंगत'** तथा **'कुसंगति' की महत्ता** तथा उनके **'विपरीत परिणाम'** को गुरबाणी में यूँ दर्शाया गया है —

साधसंगति बिनु तरिओ न कोइ ।। (पृ ३७३)
साधसंगति निहचउ है तरणा ।। (पृ १०७१)

इसलिए हमें गुरबाणी में —

कुसंगति से बचने
तथा
साध संगति में विचरण करने
की प्रेरणा दी गयी है ।

नानक कचड़िआ सिउ तोड़ि ढूढि सजण संत पकिआ ।।
ओइ जीवंदे विछुड़हि ओइ मुइआ न जाही छोड़ि ।। (पृ. ११०२)
तितु जाइ बहहु सतसंगती
तिथै हरि का हरि नामु बिलोइऐ ।। (पृ ५८७)

सची बैसक तिन्हा संगि जिन संगि जपीऐ नाउ ।।
तिन्ह संगि संगु न कीचई नानक जिना आपणा सुआउ ।।(पृ ५२०)

जिनि हरि धिआइआ तिस नो सरब कलिआण होए
नित संत जना की संगति जाइ बहीऐ मुहु जोड़ीऐ ।। (पृ ५५०)

क्रमशः.....